ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'

डॉ० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' मैथिली साहित्यक शीर्ष पर प्रतिष्ठित मणिपद्म जकाँ उद्भासित छथि एवं हुनक उपन्यास मिथिलाक संस्कृति, मैथिलत्वक गुण-गरिमा आ सामाजिकचेतना सँ मंडित अछि। यद्यपि विरासतक रूपमे हुनका मैथिली उपन्यासक एकटा क्षीण धारा प्राप्त छलनि, जकर कथ्य एकटा वर्ग विशेष धरि सीमित छल। तथापि मैथिली उपन्यासकेँ ओ जतेक देलनि, ओतेक केओ नहि दए सकलाह। मणिपद्म मात्र उपन्यासकारे टा नहि छलाह, अपितु सम्पन्न कथाकार, संवेदनशील कवि-महाकवि, चिंतनशील निबंधकार आ समर्थ नाटककार सेहो छलाह। हुनक समस्त मैथिली उपन्यास काव्यात्मक गरिमा आ नाटकीय भंगिमा सँ संवलित अछि।

मणिपद्मक उपन्यासकेँ अध्ययन-अनुशीलन क दृष्टिएँ पाँच भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि — (1) गाथा आधारित उपन्यास — राजा सलहेस, लोरिक विजय, नैका बनिजारा, दुलारु दयाल, लवहरि कुशहरि ओ राय रनपाल (2) सामाजिक उपन्यास — अर्द्धनारीश्वर, कनकी ओ फुटपाथ (3) ऐतिहासिक उपन्यास — आदिम गुलाम आ विद्यापति (4) बाल उपन्यास — भारतीक बिलाड़ि (5) रहस्य रोमांचक उपन्यास — कोबागर्ल ओ नागभूमि।

'राजा सलहेस' क कथा मे राजा सलहेसक चरित्रकेँ देशभक्ति ओ राष्ट्रप्रेमक लेल आदर्श मानल जा सकैछ। मिथिलाक मान-मर्यादा आ स्वतंत्रताक रक्षाक लेल सलहेस अपन प्राणक बलिदान दए देने छलाह। 'लोरिक विजय' मे उपन्यासकार नायक लोरिकक शौर्य पराक्रम आ लोकोद्धारक चरित्रकेँ उजागर कयलनि। लोरिक अन्याय अत्याचारक लेल संकल्पित छलाह। ओ लोकनि समाजकेँ एकटा नव दिशा आ दृष्टि आ नेतृत्व देलनि।

'नैका बनिजारा' मे व्यापारिक अभियानक मे तत्कालीन समाजक रूपांकन कएल गेल अछि। एकर कथाभूमि मे नैकाक पत्नी फुलेश्वरी पारिवारिक षडयंत्रक कारणेँ निष्कासन, कुम्हार डोमक ... ओकर क्रय-विक्रय, शीलक रक्षा आ नैकासँ पुनर्मिलन आदि प्रसंग सम...

उपन्यास अछि। 'रोप-रोपाल' क रचना पालयुगीन अभिजात्य धरातल पर भेल अछि। ललबहादुरि कुसहारी के पूजन सीता चरित्रक वनगमन कथाक वर्णन भेल अछि। ~~विपरीत~~ परी

मणिपद्मक प्रथम सामाजिक उपन्यास अछि— 'अर्द्धनारीश्वर'। एकर कथानक स्वतंत्रोयत्तर भारतीय समाजक अछि। अभिजात्य समाजकें विवाह क समस्या लेल उठल। एहि मे आदर्शक जंगा-पाजुनी सेहो प्रवाहित भेल अछि। हिनक दोसर सामाजिक उपन्यास थिक— 'कनकी'। नायिका प्रधान एहि उपन्यास क कथानक समाजक दलित ओ अपेक्षित मुसहर लोकनिक सामाजिक ओ आर्थिक जीवन प्रत्यंकित भेल अछि। 'कुलपथ' मे कोलकाताक बंगाल कालीन पारिवारिक ओ सामाजिक जीवन अभिव्यंजित अछि।

मणिपद्मक 'विद्यापति' जे ऐतिहासिक उपन्यास अछि, मे विद्यापति कालीन समाज, संस्कृति ओ परम्परा आदिक सांगोपांग वर्णन भेल अछि। 'आदि गुलाम' मे वैदकालीन समाज मे आर्य लोकनिक वर्चस्व स्थापनाक विरुद्ध अनार्य लोकनिक संघर्ष, नवागत आर्य द्वारा अनार्य लोकनिक शोषण उत्पीड़न, भाव-भंगिमा एवं अभिलाषा आदिक माध्यमे समन्वित सांस्कृतिक अभ्युदयक मार्ग प्रशस्त भेल अछि।

'भारतीक बिलाड़ि' हिनक एकमात्र बालउपन्यासिक साहित्य मे छोटका, बाबू बाधिन, हिनक गोल्ह ओ हल्लास मनुष्यक दमन करैत छथि। 'कोशीगल' ओ 'नागमणि' तंत्र पर आधारित रहस्यक ओ रोमांचक जासूसी उपन्यास थिक। एहि मे राष्ट्र भावनाक निदर्शन भेल अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहास मे बहुआयामी व्यक्तित्व क धनी श्री पानिभद्र प्रसाद अध्यापक मैथिली उपन्यासक रूपमे विख्यात छथि। हुनक उपन्यासमे देश-काल ओ परिवेशक अनुरूप एकटा विस्तृत समाजक विशाल विस्तार भेल अछि।

Scanned with CamScanner